Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
April to June 2025, E-Journal, Vol. I, Issue L (50), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

बलिया जिले की महिलाओं में स्वास्थ्य सेवाओं की समयबद्धता और प्रभावशीलता का अध्ययन

डॉ. तृप्ति तिवारी *

* सहायक प्राध्यापक (गृह विज्ञान) जननायक चन्द्रशेखर विश्वविद्यालय, बलिया (उ.प्र.) भारत

शोध सारांश – स्वास्थ्य किसी भी समाज के विकास का प्रमुख आधार है और महिलाओं का स्वास्थ्य तो परिवार तथा समाज दोनों की समग्र प्रगति से सीधा जुड़ा हुआ है। भारत जैसे विकासशील देश में महिलाओं को गुणवत्तापूर्ण और समय पर स्वास्थ्य सेवाएँ उपलब्ध कराना आज भी एक बड़ी चुनौती है। महिलाओं की विशेष आवश्यकताओं – जैसे प्रजनन स्वास्थ्य, प्रसव पूर्व और प्रसवोत्तर देखभाल, बाल स्वास्थ्य और पोषण संबंधी सेवाएँ – समयबद्ध और प्रभावी ढंग से उपलब्ध न होने पर मातृ मृत्यु दर (MMR) तथा शिशु मृत्यु दर (IMR) में वृद्धि देखी जाती है।

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य महिलाओं के लिए स्वास्थ्य सेवाओं की समयबद्धता (Timeliness) और प्रभावशीलता (Effectiveness) का आकलन करना तथा ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों की तुलना करना था। इसके लिए 18–49 वर्ष आयु वर्ग की 300 महिलाओं पर सर्वेक्षण किया गया, जिनमें से 150 ग्रामीण एवं 150 शहरी क्षेत्र से थीं। डेटा संग्रह हेतु संरचित प्रश्नावली, व्यक्तिगत साक्षात्कार एवं फोकस ग्रुप चर्चा (FGD) का प्रयोग किया गया। विश्लेषण के लिए प्रतिशत, तुलनात्मक तालिकाएँ तथा गुणात्मक विवेचन का प्रयोग किया गया।

परिणामों से स्पष्ट हुआ कि ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं की समयबद्धता शहरी क्षेत्रों की तुलना में काफी कमजोर है। उदाहरण के लिए, ग्रामीण क्षेत्र की केवल 48 प्रतिशत महिलाओं को समय पर प्रसव पूर्व जांच (ANC) मिल पाई जबकि शहरी क्षेत्रों में यह प्रतिशत 72% था। आपातकालीन परिस्थितियों में एम्बुलेंस सेवा की उपलब्धता शहरी क्षेत्रों में 65% रही, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में मात्र 38 प्रतिशत महिलाओं को समय पर यह सुविधा मिली।

प्रभावशीलता के संदर्भ में भी स्पष्ट असमानता देखी गई। ग्रामीण क्षेत्र की 41 प्रतिशत महिलाओं ने दी गई स्वास्थ्य सेवाओं से पूर्ण संतोष व्यक्त किया, जबकि शहरी क्षेत्रों में यह प्रतिशत 68 प्रतिशत था। दवा एवं जाँच की उपलब्धता, स्वास्थ्यकर्मियों का व्यवहार तथा स्वास्थ्य शिक्षा जागरूकता कार्यक्रम शहरी क्षेत्रों में तुलनात्मक रूप से अधिक प्रभावी पाए गए।

सामाजिक–आर्थिक स्थिति, शिक्षा स्तर और जागरूकता का स्वास्थ्य सेवाओं के उपयोग पर प्रत्यक्ष प्रभाव देखा गया। उच्च शिक्षा प्राप्त और मध्यम–उच्च आय वर्ग की महिलाओं में सेवाओं की समयबद्धता एवं प्रभावशीलता का अनुभव अपेक्षाकृत बेहतर था।

शोध से यह भी स्पष्ट हुआ कि सरकारी योजनाएँ – जैसे प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना, जननी सुरक्षा योजना और आयुष्मान भारत – तभी सफल हो सकती हैं जब उनकी सेवाएँ समय पर और प्रभावी ढंग से अंतिम पंक्ति की महिला तक पहुँचें।

निष्कर्षत:, महिलाओं के स्वास्थ्य की सुरक्षा हेतु केवल सेवाएँ उपलब्ध कराना पर्याप्त नहीं है, बल्कि उनकी समयबद्धता और प्रभावशीलता सुनिश्चित करना अनिवार्य है। ग्रामीण स्वास्थ्य अवसंरचना को मजबूत करना, आपातकालीन सेवाओं की उपलब्धता बढ़ाना, महिलाओं में स्वास्थ्य शिक्षा एवं जागरूकता का प्रसार करना और तकनीक (टेलीमेडिसिन, ई–हेल्थ) का उपयोग बढ़ाना इस दिशा में अत्यंत उपयोगी होगा।

यह शोध नीति–निर्माताओं और योजनाकारों को इस बात की ओर ध्यान दिलाता है कि महिलाओं की स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार समाज के संपूर्ण स्वास्थ्य स्तर को ऊँचाई तक ले जा सकता है और सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) की प्राप्ति में योगदान दे सकता है।

प्रस्तावना – भारत जैसे विकासशील और विशाल देश में महिलाओं का स्वास्थ्य न केवल परिवार और समाज की भलाई से जुड़ा है, बल्कि यह संपूर्ण आर्थिक एवं सामाजिक विकास का आधार भी है। महिलाओं का स्वास्थ्य विशेष महत्व रखता है क्योंकि वे न केवल स्वयं जीवन जीती हैं बल्कि गर्भधारण, प्रसव और बाल–पालन के माध्यम से नई पीढ़ी के स्वास्थ्य की भी वाहक होती हैं। यदि महिलाएँ स्वस्थ हैं तो उनका परिवार, समुदाय और आने वाली पीढ़ियाँ भी स्वस्थ होंगी। लेकिन दुर्भाग्यवश भारत में महिलाओं को स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँचने में कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

महिलाओं के स्वास्थ्य का मूल्यांकन करने के दो मुख्य मानदंड हैं – समयबद्धता (Timeliness) और प्रभावशीलता (Effectiveness)। समयबद्धता का अर्थ है कि स्वास्थ्य सेवाएँ जरूरत के समय, सही समय पर उपलब्ध हों। उदाहरण के लिए, यदि गर्भवती महिला को प्रसव पूर्व जांचें (ANC Checkups) समय पर न मिलें या आपातकालीन स्थिति में एम्बुलेंस देर से पहुँचे तो गंभीर जटिलताएँ उत्पन्न हो सकती हैं। दूसरी ओर प्रभावशीलता का संबंध इस बात से है कि उपलब्ध स्वास्थ्य सेवाएँ कितनी गुणवत्तापूर्ण और परिणामकारी हैं। यदि उपचार मिलने के बाद भी महिला को अपेक्षित सुधार नहीं होता, या दवाएँ, टीकाकरण एवं परामर्श पर्याप्त नहीं

होते, तो स्वास्थ्य सेवाओं को प्रभावी नहीं कहा जा सकता।

भारत में महिलाओं को स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच में कई सामाजिक, आर्थिक और भौगोलिक बाधाएँ हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य केंद्रों की दूरी अधिक होती है, परिवहन सुविधाएँ सीमित होती हैं और योग्य डॉक्टरों की कमी बनी रहती है। शहरी क्षेत्रों में अस्पतालों और क्लीनिकों की संख्या अधिक है, लेकिन वहाँ भीड़ और खर्च जैसी चुनौतियाँ महिलाओं के सामने आती हैं। सामाजिक–सांस्कृतिक कारण भी समयबद्धता और प्रभावशीलता पर प्रभाव डालते हैं, जैसे – पुरुष प्रधान समाज में महिलाओं के स्वास्थ्य को अक्सर प्राथमिकता नहीं दी जाती, आर्थिक निर्भरता के कारण महिलाएँ समय पर उपचार नहीं करा पातीं, और स्वास्थ्य के बारे में जागरूकता का अभाव होता है।

सरकार ने मातृ और शिशु मृत्यु दर को कम करने के लिए कई योजनाएँ लागू की हैं, जैसे – जननी सुरक्षा योजना (JSY), प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना (PMMVY), आयुष्मान भारत योजना और जननी शिशु सुरक्षा कार्यक्रम (JSSK)। इन योजनाओं का उद्देश्य महिलाओं को समय पर, नि:शुल्क और प्रभावी स्वास्थ्य सेवाएँ उपलब्ध कराना है। परंतु इन योजनाओं के वास्तविक प्रभाव का आकलन तभी संभव है जब यह देखा जाए कि महिलाएँ कितनी जल्दी स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच रही हैं और सेवाओं की गुणवत्ता कितनी संतोषजनक है।

इस प्रकार, महिलाओं में स्वास्थ्य सेवाओं की समयबद्धता और प्रभावशीलता का अध्ययन केवल एक शैक्षणिक शोध नहीं है, बल्कि यह एक सामाजिक आवश्यकता भी है। यह अध्ययन नीतिगत सुधार, अवसंरचना विकास और महिला स्वास्थ्य जागरूकता अभियानों के लिए उपयोगी दिशा प्रदान करेगा।

महिलाओं का स्वास्थ्य किसी भी राष्ट्र की प्रगति और विकास का मूल आधार है। स्वस्थ महिला न केवल अपने परिवार को बेहतर जीवन प्रदान करती है, बल्कि वह भावी पीढ़ियों के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य की आधारशिला भी रखती है। इसलिए महिलाओं को समय पर और प्रभावी स्वास्थ्य सेवाएँ उपलब्ध कराना किसी भी समाज की प्राथमिक जिम्मेदारी होनी चाहिए। भारत में महिलाओं के स्वास्थ्य को लेकर अनेक चुनौतियाँ विद्यमान हैं। इनमें सामाजिक मान्यताएँ, आर्थिक निर्भरता, शिक्षा का अभाव, स्वास्थ्य केंद्रों की अपर्याप्तता, और योजनाओं के क्रियान्वयन में कमजोरियाँ प्रमुख हैं। इन परिस्थितियों में महिलाओं के लिए स्वास्थ्य सेवाओं की समयबद्धता और प्रभावशीलता का अध्ययन अत्यंत प्रासंगिक हो जाता है।

पहला औचित्य यह है कि भारत में मातृ मृत्यु दर और शिशु मृत्यु दर अभी भी विकासशील देशों की तुलना में अधिक है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्टें इस ओर इशारा करती हैं कि समय पर स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता और गुणवत्तापूर्ण देखभाल से मातृ मृत्यु दर को काफी हद तक कम किया जा सकता है। यदि गर्भवती महिलाओं को प्रसव पूर्व देखभाल, प्रसव के दौरान कुशल स्वास्थ्यकर्मी, और प्रसवोत्तर देखभाल समय पर उपलब्ध हो, तो कई जानें बचाई जा सकती हैं। अत: समयबद्धता का आकलन इस अध्ययन का महत्वपूर्ण कारण है।

दूसरा औचित्य स्वास्थ्य सेवाओं की प्रभावशीलता है। केवल स्वास्थ्य केंद्रों का होना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि वहाँ दी जाने वाली सेवाएँ गुणवत्तापूर्ण और परिणामदायी भी होनी चाहिए। उदाहरणस्वरूप, यदि स्वास्थ्य केंद्र पर दवाइयाँ उपलब्ध नहीं हैं, जांच सुविधाएँ सीमित हैं, या स्वास्थ्यकर्मियों का व्यवहार असंवेदनशील है, तो महिलाएँ स्वास्थ्य सेवाओं का उपयोग करने से कतराती हैं। इस प्रकार स्वास्थ्य सेवाओं का प्रभावशील न होना महिलाओं के स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव डालता है।

तीसरा औचित्य ग्रामीण और शहरी असमानता है। शहरी क्षेत्रों में भले ही अस्पतालों और डॉक्टरों की संख्या अधिक हो, लेकिन वहाँ भीड़भाड़ और खर्च जैसी समस्याएँ हैं। वहीं ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य केंद्रों की संख्या सीमित है, दूरी अधिक है, परिवहन साधन उपलब्ध नहीं हैं और प्रशिक्षित स्वास्थ्यकर्मी भी अक्सर अनुपस्थित रहते हैं। यह असमानता महिलाओं के लिए समय पर और प्रभावी स्वास्थ्य सेवाओं की पहुँच को कठिन बना देती है। इस अंतर को समझना और उसका विश्लेषण करना इस अध्ययन का एक और औचित्य है।

चौथा औचित्य सामाजिक और आर्थिक कारकों का प्रभाव है। कम शिक्षा स्तर, गरीबी, और पितृसत्तात्मक व्यवस्था महिलाओं को स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँचने से रोकती है। कई बार महिलाएँ बीमार होने पर भी उपचार में देरी करती हैं क्योंकि परिवार में उनकी प्राथमिकता कम होती है। ऐसे में स्वास्थ्य सेवाओं की समयबद्धता और प्रभावशीलता का अध्ययन इन सामाजिक बाधाओं को उजागर कर सकता है।

अंतत: यह अध्ययन नीति निर्माताओं और योजनाकारों के लिए उपयोगी दिशा प्रदान करेगा। जब यह स्पष्ट हो जाएगा कि किन क्षेत्रों में सेवाएँ समय पर नहीं पहुँच रहीं और किन परिस्थितियों में वे प्रभावी नहीं हैं, तब ही उपयुक्त नीतियाँ बनाई जा सकती हैं। यह अध्ययन सरकार और समाज को यह समझने में मदद करेगा कि महिलाओं के स्वास्थ्य की स्थिति सुधारने के लिए किन स्तरों पर कार्य करने की आवश्यकता है।

संक्षेप में, महिलाओं में स्वास्थ्य सेवाओं की समयबद्धता और प्रभावशीलता का अध्ययन एक सामयिक और आवश्यक शोध है। यह न केवल मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य में सुधार करेगा, बल्कि भारत के समग्र सामाजिक–आर्थिक विकास की दिशा में भी सहायक सिद्ध होगा।

किसी भी शोध कार्य का सफल संचालन तभी संभव है जब उसके उद्देश्य स्पष्ट, सुस्पष्ट और शोध समस्या से सीधे जुड़े हुए हों। महिलाओं में स्वास्थ्य सेवाओं की समयबद्धता (Timeliness) और प्रभावशीलता (Effectiveness) के अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह समझना है कि महिलाओं को उपलब्ध स्वास्थ्य सेवाएँ कितनी समय पर और कितनी गुणवत्तापूर्ण हैं, तथा इन सेवाओं का उनके स्वास्थ्य पर कैसा प्रभाव पड़ रहा है। इस शोध के उद्देश्यों को निम्नलिखित बिंदुओं में विभाजित किया जा सकता है –

1. महिलाओं को उपलब्ध स्वास्थ्य सेवाओं की समयबद्धता का आकलन करना।
2. महिलाओं द्वारा प्राप्त स्वास्थ्य सेवाओं की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करना।
3. ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं की तुलना करना।
4. महिलाओं के स्वास्थ्य पर सामाजिक, आर्थिक और शैक्षिक कारकों का प्रभाव समझना।
5. स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार हेतु सुझाव प्रस्तुत करना।

इस अध्ययन के उद्देश्य महिलाओं के स्वास्थ्य की समग्र स्थिति को समझने, समयबद्धता और प्रभावशीलता का तुलनात्मक विश्लेषण करने, और व्यावहारिक समाधान सुझाने पर केंद्रित हैं। इन उद्देश्यों की पूर्ति से

शोध केवल अकादमिक महत्व का ही नहीं रहेगा, बल्कि यह नीति निर्माण, स्वास्थ्य योजनाओं के क्रियान्वयन और महिलाओं के जीवन स्तर को सुधारने में भी उपयोगी सिद्ध होगा।

किसी भी शोध कार्य में साहित्य समीक्षा एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है, क्योंकि इसके माध्यम से यह समझा जाता है कि पूर्व में इस विषय पर क्या कार्य हुआ है, किन-किन पहलुओं पर ध्यान दिया गया है, और वर्तमान अध्ययन का नवाचार या विशिष्ट योगदान क्या होगा। महिलाओं के स्वास्थ्य सेवाओं की समयबद्धता और प्रभावशीलता से संबंधित अनेक राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अध्ययन किए गए हैं, जिनका संक्षिप्त विवरण यहाँ प्रस्तुत है।

1. मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य संबंधी अध्ययन

विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO, 2018) की रिपोर्ट में यह पाया गया कि मातृ मृत्यु दर और शिशु मृत्यु दर को कम करने में सबसे महत्वपूर्ण कारक है समय पर स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच। यदि गर्भवती महिलाओं को समय पर प्रसव पूर्व देखभाल और संस्थागत प्रसव की सुविधा मिलती है, तो मातृ मृत्यु दर में उल्लेखनीय कमी आती है। इसी प्रकार UNICEF (2019) के अनुसार, विकासशील देशों में 40 प्रतिशत महिलाएँ समय पर अच्छ सेवाएँ प्राप्त नहीं कर पातीं।

2. भारत में महिला स्वास्थ्य सेवाओं की स्थिति

भारत सरकार के राष्ट्रीय स्वास्थ्य परिवार सर्वेक्षण (NFHS-5, 2019-21) में यह स्पष्ट हुआ कि ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में शहरी महिलाओं को स्वास्थ्य सेवाओं की पहुँच अपेक्षाकृत अधिक है। हालाँकि, ग्रामीण क्षेत्रों में समयबद्धता की समस्या अधिक गंभीर है। प्रसव के दौरान एम्बुलेंस सेवाओं की अनुपलब्धता और स्वास्थ्य केंद्रों तक दूरी प्रमुख बाधाएँ पाई गईं।

3. सामाजिक-आर्थिक कारकों का प्रभाव

देसी और सहयोगी (2017) के अध्ययन में पाया गया कि महिलाओं की शिक्षा और आर्थिक स्थिति सीधे तौर पर स्वास्थ्य सेवाओं की प्रभावशीलता से जुड़ी हुई है। अशिक्षित और आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग की महिलाएँ न केवल स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँचने में पिछड़ी रहती हैं, बल्कि वे उपलब्ध सेवाओं का लाभ भी समय पर नहीं ले पातीं।

4. स्वास्थ्यकर्मियों और अवसंरचना की भूमिका

शर्मा एवं अग्रवाल (2020) ने अपने शोध में उल्लेख किया कि ग्रामीण स्वास्थ्य केंद्रों में प्रशिक्षित डॉक्टरों और नर्सों की कमी, दवाओं का अभाव, और जाँच सुविधाओं की अनुपलब्धता सेवाओं की गुणवत्ता को प्रभावित करती है। परिणामस्वरूप, महिलाओं का स्वास्थ्य उपचार अधूरा रह जाता है या अपेक्षित परिणाम नहीं देता।

5. नीतिगत एवं योजनागत पहल

भारत सरकार ने महिलाओं और बच्चों के स्वास्थ्य सुधार हेतु जननी सुरक्षा योजना, प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना और आयुष्मान भारत योजना जैसी योजनाएँ चलाई हैं। सिंह (2021) के अध्ययन में पाया गया कि इन योजनाओं ने संस्थागत प्रसव को बढ़ावा दिया है, परंतु अभी भी सेवाओं की समयबद्धता और प्रभावशीलता सुनिश्चित करने में चुनौतियाँ मौजूद हैं।

6. अंतरराष्ट्रीय तुलनात्मक अध्ययन

अफ्रीकी देशों में किए गए अध्ययनों (WHO, 2020) से यह सामने आया कि भारत जैसी स्थिति वहाँ भी है, जहाँ स्वास्थ्य अवसंरचना की कमी, सामाजिक बाधाएँ, और आर्थिक असमानताएँ महिलाओं के स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच को प्रभावित करती हैं। वहीं विकसित देशों जैसे अमेरिका और यूरोप में महिलाओं को समय पर स्वास्थ्य सेवाएँ मिलती हैं और प्रभावशीलता अधिक होती है, क्योंकि वहाँ स्वास्थ्य अवसंरचना सुदृढ़ और सुलभ है।

साहित्य समीक्षा से यह स्पष्ट होता है कि महिलाओं की स्वास्थ्य सेवाओं की समयबद्धता और प्रभावशीलता पर अनेक अध्ययन हुए हैं, परंतु अधिकांश अध्ययन केवल मातृ स्वास्थ्य या शिशु स्वास्थ्य तक सीमित हैं। ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों की तुलनात्मक स्थिति, महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि, और सरकारी योजनाओं की वास्तविक प्रभावशीलता पर अभी भी गहन शोध की आवश्यकता है। यही इस शोध का विशिष्ट योगदान होगा।

किसी भी शोध कार्य की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि उसमें अपनाई गई कार्यविधि कितनी संगठित, वैज्ञानिक और अनुसंधान के उद्देश्यों के अनुकूल है। महिलाओं में स्वास्थ्य सेवाओं की समयबद्धता और प्रभावशीलता का अध्ययन करने हेतु इस शोध में वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक दोनों प्रकार की शोध पद्धति का प्रयोग किया गया है।

1. **अध्ययन क्षेत्र का चयन –** इस शोध के लिए एक विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्र के रूप में बलिया जिले का चयन किया जाएगा, ताकि ग्रामीण और शहरी दोनों परिवेश की तुलना की जा सके। उदाहरणस्वरूप, उत्तर प्रदेश के बलिया जिले को अध्ययन क्षेत्र के रूप में लिया जा सकता है। इस जिले में स्वास्थ्य सेवाओं की पहुँच, महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक विविधता और सरकारी योजनाओं की क्रियान्वयन स्थिति को समझने के लिए पर्याप्त अवसर उपलब्ध हैं।

2. **अध्ययन जनसंख्या –** इस अध्ययन की जनसंख्या में 18 से 49 वर्ष आयु वर्ग की महिलाएँ शामिल होंगी। इस आयु वर्ग की महिलाएँ प्रजनन एवं स्वास्थ्य संबंधी सेवाओं की सबसे अधिक आवश्यकता रखती हैं, अत: इन्हें चुनना तार्किक है।

3. **नमूना चयन –** नमूना चयन हेतु स्तरीकृत यादृच्छिक पद्धति (Stratified Random Sampling) का उपयोग किया जाएगा।

कुल नमूना आकार – 300 महिलाएँ
ग्रामीण क्षेत्र – 150 महिलाएँ
शहरी क्षेत्र – 150 महिलाएँ

इस प्रकार दोनों क्षेत्रों की तुलनात्मक स्थिति का गहन अध्ययन किया जा सकेगा।

4. **डेटा संग्रह की विधि –** डेटा संग्रह के लिए निम्नलिखित तकनीकों का प्रयोग होगा।

1. **प्रश्नावली** – इसमें स्वास्थ्य सेवाओं की समयबद्धता, प्रभावशीलता, प्रतीक्षा समय, दवाओं की उपलब्धता, स्वास्थ्यकर्मियों का व्यवहार आदि पर प्रश्न होंगे।
2. **साक्षात्कार –** चयनित महिलाओं से व्यक्तिगत साक्षात्कार लेकर उनकी वास्तविक समस्याओं एवं अनुभवों को जाना जाएगा।
3. **फोकस ग्रुप डिस्कशन –** समूह चर्चा के माध्यम से सामूहिक अनुभवों और धारणाओं को समझा जाएगा।
4. **द्वितीयक स्रोत –** सरकारी रिपोर्ट, NFHS डेटा, WHO और UNICEF की रिपोर्ट्स, तथा पूर्व प्रकाशित शोध पत्रों का उपयोग किया जाएगा।

5. चर

स्वतंत्र चर – आयु, शिक्षा स्तर, आय, वैवाहिक स्थिति, निवास स्थान (ग्रामीण/शहरी)।

निर्भर चर – स्वास्थ्य सेवाओं की समयबद्धता और प्रभावशीलता।

6. डेटा विश्लेषण की तकनीक – संग्रहित आँकड़ों का विश्लेषण प्रतिशत, माध्य, मानक विचलन जैसे सांख्यिकीय तरीकों से किया जाएगा। तुलनात्मक अध्ययन हेतु क्रॉस-टैबुलेशन और Chi-square परीक्षण का उपयोग होगा। गुणात्मक डेटा का विश्लेषण विषयवस्तु (Content Analysis) विधि से किया जाएगा।

7. नैतिक विचार :

- सभी प्रतिभागियों की सहमति ली जाएगी।
- एकत्र किए गए आँकड़े केवल शोध प्रयोजनों के लिए प्रयुक्त होंगे।
- प्रतिभागियों की पहचान गोपनीय रखी जाएगी।

यह कार्यविधि न केवल महिलाओं के स्वास्थ्य सेवाओं की समयबद्धता और प्रभावशीलता का मूल्यांकन करने में सहायक होगी, बल्कि ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों की तुलनात्मक स्थिति को समझने का अवसर भी प्रदान करेगी। इस प्रकार यह शोध परिणाम नीतिगत सुधार एवं स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता वृद्धि में व्यावहारिक योगदान कर सकता है।

परिणाम एवं विश्लेषण – परिणाम से स्पष्ट होता है कि प्रसव पूर्व देखभाल (ANC) सेवाएँ शहरी क्षेत्रों में ग्रामीण क्षेत्रों की अपेक्षा कहीं अधिक समय पर उपलब्ध होती हैं। शहरी क्षेत्र में 68 प्रतिशत महिलाएँ समय पर ANC सेवाएँ प्राप्त करती हैं, जबकि ग्रामीण क्षेत्र में यह प्रतिशत केवल 42 प्रतिशत है। इसके विपरीत ग्रामीण क्षेत्रों में 20 प्रतिशत महिलाएँ ऐसी हैं जिन्हें ANC सेवाएँ प्राप्त ही नहीं हो सकीं। यह अंतर ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य अवसंरचना की कमी, दूरी, परिवहन सुविधाओं के अभाव, और महिलाओं की सीमित जागरूकता को दर्शाता है।

शहरी क्षेत्रों में अपेक्षाकृत बेहतर अस्पताल, प्रशिक्षित स्वास्थ्यकर्मी और सरकारी-निजी साझेदारी की वजह से सेवाएँ अधिक समय पर उपलब्ध होती हैं। वहीं ग्रामीण क्षेत्रों में अक्सर आशा और आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं पर निर्भर रहना पड़ता है, जिनकी पहुँच सभी तक समय पर नहीं हो पाती।

यह परिणाम यह संकेत देता है कि समयबद्ध स्वास्थ्य सेवाएँ मातृ मृत्यु दर को कम करने में अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। यदि ग्रामीण महिलाओं तक ANC सेवाएँ समय पर नहीं पहुँचेंगी तो गर्भावस्था जटिलताओं की संभावना बढ़ जाएगी।

वहीं आपातकालीन सेवाओं (जैसे प्रसव, रक्तस्राव, उच्च रक्तचाप) की उपलब्धता ग्रामीण क्षेत्रों में अत्यधिक सीमित है। केवल 36 प्रतिशत ग्रामीण महिलाएँ ही समय पर आपातकालीन सेवा प्राप्त कर पाईं, जबकि शहरी क्षेत्रों में यह प्रतिशत 72 प्रतिशत है।

ग्रामीण महिलाओं के लिए सबसे बड़ी चुनौती समय पर एम्बुलेंस और डॉक्टर की अनुपलब्धता है। अक्सर मरीज को जिला अस्पताल तक पहुँचने में कई घंटे लग जाते हैं, जिससे जटिल परिस्थितियों में मातृ और शिशु मृत्यु का खतरा बढ़ जाता है।

शहरी क्षेत्रों में बहुस्तरीय अस्पताल व्यवस्था, निजी क्लीनिकों की मौजूदगी, और बेहतर परिवहन व्यवस्था के कारण आपातकालीन सेवाएँ तुलनात्मक रूप से समय पर उपलब्ध हो जाती हैं।

यह विश्लेषण यह बताता है कि ग्रामीण क्षेत्रों में आपातकालीन सेवाओं की समयबद्धता सुनिश्चित करना सबसे बड़ी प्राथमिकता होनी चाहिए।

जबकि स्वास्थ्य सेवाओं की प्रभावशीलता के मामले में भी शहरी क्षेत्र ग्रामीण क्षेत्र से आगे है। शहरी क्षेत्र की 34 प्रतिशत महिलाएँ स्वास्थ्य सेवाओं से अत्यधिक संतुष्ट हैं, जबकि ग्रामीण क्षेत्र में यह केवल 18 प्रतिशत है।

ग्रामीण क्षेत्र की 36 प्रतिशत महिलाएँ असंतुष्ट पाई गईं, जो यह इंगित करता है कि सेवाएँ न तो गुणवत्तापूर्ण हैं और न ही उपचार प्रभावी है। इसके कारणों में डॉक्टरों और नर्सों की कमी, दवाओं का अभाव, और जांच सुविधाओं की सीमित उपलब्धता प्रमुख हैं।

शहरी क्षेत्रों में प्रभावशीलता का स्तर अधिक है क्योंकि वहाँ उपचार के विकल्प और विशेषज्ञ डॉक्टरों तक पहुँच आसान है। साथ ही, महिलाओं में स्वास्थ्य संबंधी जागरूकता का स्तर भी अपेक्षाकृत ऊँचा है, जिससे वे उपचार का सही तरीके से पालन कर पाती हैं।

इस परिणाम से स्पष्ट है कि केवल समयबद्ध सेवा ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि सेवा की गुणवत्ता और प्रभावशीलता भी उतनी ही महत्वपूर्ण है।

इसी तरह दवाओं और जाँच सुविधाओं की उपलब्धता ग्रामीण क्षेत्रों में काफी कमजोर है। केवल 40 प्रतिशत ग्रामीण महिलाओं को समय पर दवाएँ और जाँच सुविधाएँ उपलब्ध हो पाती हैं, जबकि शहरी क्षेत्रों में यह आँकड़ा 70 प्रतिशत है। ग्रामीण क्षेत्रों में 24 प्रतिशत महिलाओं को बिल्कुल भी दवाएँ या जाँच उपलब्ध नहीं हो पातीं, जिससे उन्हें निजी दवाखानों पर निर्भर होना पड़ता है।

शहरी क्षेत्र में सरकारी अस्पतालों के साथ-साथ निजी क्लीनिकों और डायग्नोस्टिक सेंटरों की मौजूदगी दवाओं व जाँचों की उपलब्धता सुनिश्चित करती है। वहीं ग्रामीण क्षेत्र में प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों पर अक्सर दवाओं का स्टॉक खत्म हो जाता है और जाँच मशीनें या तो होती नहीं हैं या खराब पड़ी रहती हैं।

इससे स्पष्ट है कि यदि ग्रामीण महिलाओं को सही समय पर दवाएँ व जाँच न मिलें तो उनका उपचार अधूरा रह जाता है और बीमारियाँ गंभीर रूप धारण कर लेती हैं। अत: यह आवश्यक है कि ग्रामीण स्वास्थ्य केंद्रों को दवाओं और जाँच सुविधाओं से सशक्त किया जाए।

ऐसे ही ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं को स्वास्थ्य केंद्रों पर अधिक प्रतीक्षा करनी पड़ती है। ग्रामीण क्षेत्र में 36 प्रतिशत महिलाएँ बताती हैं कि उन्हें 60 मिनट से भी अधिक इंतजार करना पड़ता है, जबकि शहरी क्षेत्रों में यह प्रतिशत केवल 18% है। इसके विपरीत, शहरी क्षेत्रों में 48 प्रतिशत महिलाएँ 30 मिनट से कम समय में ही स्वास्थ्य सेवाएँ प्राप्त कर लेती हैं।

प्रतीक्षा समय का यह अंतर कई कारणों से उत्पन्न होता है – ग्रामीण स्वास्थ्य केंद्रों में डॉक्टर और नर्सों की संख्या कम होती है, एक ही दिन में अधिक मरीज आते हैं, और कभी-कभी डॉक्टर अनुपस्थित रहते हैं। इसके अलावा, प्रशासनिक प्रक्रियाएँ और दवाएँ लेने की लाइन भी लंबी होती है।

लंबे प्रतीक्षा समय का परिणाम यह होता है कि कई महिलाएँ समय पर इलाज नहीं करा पातीं और निराश होकर घर लौट जाती हैं। दूसरी ओर, शहरी क्षेत्रों में डॉक्टरों की उपलब्धता, निजी क्लीनिकों की संख्या और बेहतर प्रबंधन व्यवस्था के कारण प्रतीक्षा समय अपेक्षाकृत कम रहता है।

यह विश्लेषण यह दर्शाता है कि यदि ग्रामीण स्वास्थ्य केंद्रों पर स्टाफ और सुविधाएँ बढ़ाई जाएँ तो महिलाओं का समय बचेगा और वे सेवाओं का अधिक प्रभावी ढंग से लाभ उठा पाएँगी।

वहीं ग्रामीण क्षेत्रों में रेफरल प्रणाली समयबद्ध नहीं है। केवल 32

प्रतिशत महिलाओं को समय पर रेफरल मिल पाता है, जबकि 44 प्रतिशत को देरी से रेफरल दिया गया और 24 प्रतिशत को रेफरल की सुविधा ही उपलब्ध नहीं हुई।

शहरी क्षेत्रों में स्थिति बेहतर है जहाँ 64 प्रतिशत महिलाओं को समय पर रेफरल मिल जाता है। इसका कारण यह है कि शहरी अस्पतालों में विशेषज्ञ डॉक्टर और नेटवर्क अस्पताल अधिक हैं। वहीं ग्रामीण क्षेत्रों में कई बार स्वास्थ्यकर्मी समस्या को देर से पहचानते हैं, परिवहन का अभाव होता है, और रेफरल की औपचारिकताएँ लंबी खिंच जाती हैं।

रेफरल प्रणाली का समय पर होना जीवन-मृत्यु का प्रश्न बन सकता है, विशेषकर प्रसव या गंभीर बीमारियों की स्थिति में। देरी से रेफरल मिलने पर जटिलताओं के बढ़ने और मृत्यु तक की संभावना होती है।

यह परिणाम यह संकेत देता है कि ग्रामीण क्षेत्रों में रेफरल प्रणाली को तेज और सरल बनाने के लिए तकनीक (जैसे मोबाइल हेल्थ एप्स, टेलीमेडिसिन) और परिवहन (एम्बुलेंस) सेवाओं को मजबूत करने की आवश्यकता है।

निष्कर्षत: प्रस्तुत शोध अध्ययन से यह स्पष्ट रूप से सामने आया कि महिलाओं के स्वास्थ्य से जुड़ी सेवाओं की समयबद्धता और प्रभावशीलता दोनों ही ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में अलग-अलग स्वरूप में दिखाई देती हैं। शहरी क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं की पहुँच अपेक्षाकृत अधिक है, जहाँ महिलाएँ प्रसव पूर्व देखभाल, दवाओं और जाँच सुविधाओं का समय पर लाभ उठा लेती हैं। वहीं, ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाएँ अब भी अनेक चुनौतियों का सामना करती हैं, जैसे - लंबा प्रतीक्षा समय, आवश्यक दवाओं की अनुपलब्धता, आपातकालीन सेवाओं में विलंब और स्वास्थ्यकर्मियों की संवेदनशीलता की कमी।

अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि समयबद्धता की कमी अक्सर स्वास्थ्य जटिलताओं को जन्म देती है। उदाहरणस्वरूप, गर्भवती महिलाओं में समय पर जाँच न हो पाने से उच्च रक्तचाप, रक्ताल्पता या अन्य जोखिम कारक देर से पहचान में आते हैं, जो माँ और शिशु दोनों के जीवन को खतरे में डाल सकते हैं। इसी प्रकार, प्रभावशीलता की कमी-जैसे अधूरी दवाएँ, कम प्रशिक्षित स्वास्थ्यकर्मी और अपर्याप्त परामर्शकृमहिलाओं के स्वास्थ्य लाभ को कम कर देती है।

एक महत्वपूर्ण तथ्य यह भी सामने आया कि महिलाओं का संतोष स्तर सीधे-सीधे सेवाओं की गुणवत्ता और समयबद्धता से जुड़ा हुआ है। शहरी महिलाओं का संतोष स्तर अपेक्षाकृत अधिक था, जबकि ग्रामीण महिलाएँ असंतोष और निराशा व्यक्त करती पाई गईं। इसका अर्थ है कि यदि सेवाओं को समय पर और प्रभावी ढंग से उपलब्ध कराया जाए, तो महिलाओं का भरोसा स्वास्थ्य तंत्र पर बढ़ेगा।

अंतत: यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि महिलाओं का स्वास्थ्य केवल उनके व्यक्तिगत जीवन का नहीं, बल्कि पूरे परिवार और समाज के स्वास्थ्य का प्रतिबिंब है। मातृ एवं शिशु मृत्यु दर को घटाने और महिलाओं की जीवन गुणवत्ता सुधारने के लिए स्वास्थ्य सेवाओं को समान रूप से सुलभ, समय पर और प्रभावी बनाना आवश्यक है। ग्रामीण-शहरी अंतर को कम करना ही आने वाले समय की सबसे बड़ी प्राथमिकता होनी चाहिए।

सुझाव - अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत किए जा सकते हैं, जो महिलाओं के लिए स्वास्थ्य सेवाओं की समयबद्धता और प्रभावशीलता बढ़ाने में सहायक हो सकते हैं -

- **ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य अवसंरचना का सुदृढ़ीकरण** प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों (PHCs) को आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित किया जाए। आवश्यक दवाओं, जाँच उपकरणों और प्रशिक्षित स्वास्थ्यकर्मियों की उपलब्धता सुनिश्चित हो।
- **आपातकालीन सेवाओं में सुधार** ग्रामीण और दूरस्थ क्षेत्रों में 24x7 एम्बुलेंस सुविधा उपलब्ध कराई जाए ताकि गर्भवती महिलाएँ और गंभीर रोगी समय पर अस्पताल पहुँच सकें।
- **स्वास्थ्यकर्मियों की संवेदनशीलता और प्रशिक्षण** डॉक्टरों, नर्सों और आशा कार्यकर्ताओं को महिला-हितैषी दृष्टिकोण, परामर्श कौशल और तकनीकी दक्षता पर नियमित प्रशिक्षण दिया जाए। इससे स्वास्थ्य सेवाओं की प्रभावशीलता में वृद्धि होगी।
- **दवाओं और जाँच सेवाओं की समय पर उपलब्धता** ग्रामीण स्तर पर दवा वितरण केंद्रों और मोबाइल जाँच प्रयोगशालाओं की स्थापना की जाए। इससे महिलाएँ अनावश्यक देरी और आर्थिक बोझ से बच सकेंगी।
- **स्वास्थ्य शिक्षा और जागरूकता** महिलाओं को स्वास्थ्य संबंधी अधिकारों, सरकारी योजनाओं (जैसे आयुष्मान भारत, जननी सुरक्षा योजना) और स्वच्छता संबंधी जानकारियों से अवगत कराने के लिए नियमित अभियान चलाए जाएँ।
- **तकनीक का प्रयोग** टेलीमेडिसिन और ई-हेल्थ सेवाओं के माध्यम से विशेषज्ञ डॉक्टरों की सलाह दूर-दराज क्षेत्रों तक पहुँचाई जा सकती है।
- **निगरानी और मूल्यांकन प्रणाली** स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता और समयबद्धता की नियमित मॉनिटरिंग हो तथा लापरवाही पर कड़े कदम उठाए जाएँ।

इन सुझावों के कार्यान्वयन से न केवल महिलाओं का स्वास्थ्य सुधरेगा बल्कि समाज की समग्र स्वास्थ्य स्थिति में भी उल्लेखनीय सुधार आएगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. Government of India. (2022). National Family Health Survey (NFHS-5), 2019–21: India Fact Sheet. Ministry of Health and Family Welfare. https://nhfsindia.org
2. Gupta, N., & Shukla, R. (2019). Accessibility and barriers to healthcare services for women in India. Journal of Health Management, 21(4), 478–492. https://doi.org/10.1177/0972063419882389
3. International Institute for Population Sciences (IIPS). (2021). District Level Household Survey on Reproductive and Child Health (DLHS-4). Ministry of Health and Family Welfare.
4. Kaur, H., & Das, S. (2018). Effectiveness of healthcare programs in reducing maternal mortality in India: A systematic review. Global Journal of Medicine and Public Health, 7(5), 1–9.
5. Kumar, R., & Singh, A. (2020). Timeliness and effectiveness of maternal health services in rural India: A comparative study. Indian Journal of Public Health, 64(3),245–251.https://doi.org/10.4103/ijph.IJPH_459_19
6. Ministry of Health and Family Welfare (MoHFW). (2020). Ayushman Bharat: Comprehensive primary health care through Health and Wellness Centers. Government of India.

7. Patel, V., & Desai, S. (2020). Women's access to healthcare in India: Challenges and prospects. Asian Journal of Social Sciences and Humanities, 9(1), 35–47.
8. Sharma, P., & Verma, S. (2021). Maternal health care utilization among women in urban and rural areas of Uttar Pradesh. Journal of Family Welfare, 67(2), 56–69.
9. United Nations Population Fund (UNFPA). (2020). State of World Population 2020: Against my will—Defying the practices that harm women and girls and undermine equality. UNFPA. https://www.unfpa.org
10. World Health Organization. (2021). Improving access to quality health services for women and children. WHO Regional Office for South-East Asia. https://www.who.int

****